भूस्खलन

सामान्य जानकारी

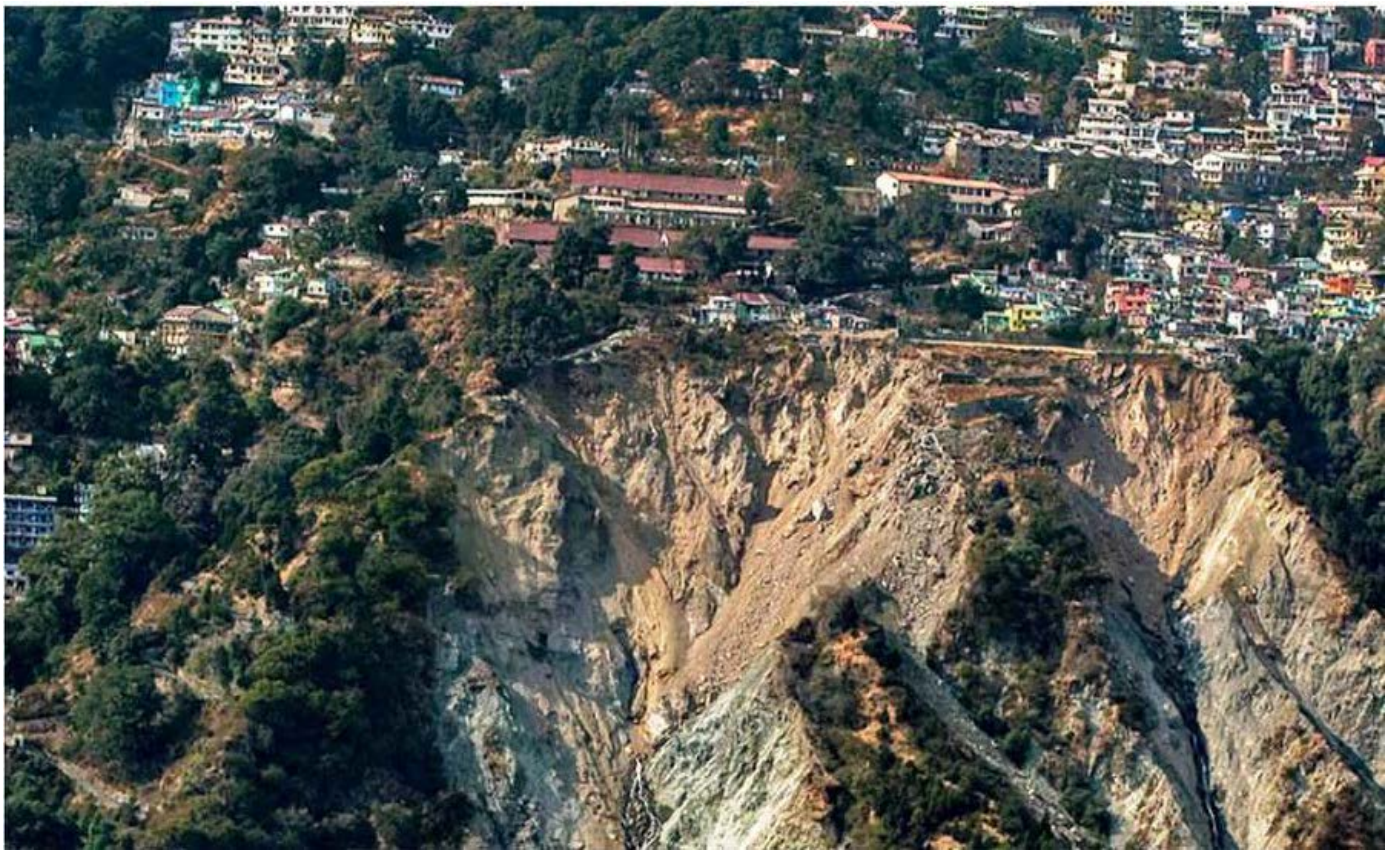

आपदा प्रबन्धन प्रकोष्ठ

डॉ0 रघुनन्दन सिंह टोलिया उत्तराखण्ड प्रशासन अकादमी

नैनीताल

फोन नं0: 05942–239114, 235011, 236149

फैक्स नं0: 05942–239114

ई–मेलः dmcuaoantl@gmail.com

भूस्खलनः एक पहाड़ी खतरा, हमारा बचाव

क्या है भूस्खलन?

जब पहाड़ की मिट्टी, मलबा या पत्थर अचानक बड़ी तेजी से नीचे गिरने लगते हैं तो उसे भूस्खलन (Landslide) कहते हैं। उत्तराखण्ड में यह एक आम समस्या है, खासकर बरसात के मौसम में।

भूस्खलन क्यों होता है?

भूस्खलन के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ प्राकृतिक हैं और कुछ मानव जनित है।

प्राकृतिक कारणः

- **तेज या लगातार बारिश :** जब बारिश बहुत ज्यादा होती है तो मिट्टी पानी को सोख लेती है और भारी होकर खिसकने लगती है।
- **बादल फटना :** अचानक बहुत ज्यादा बारिश होने से भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है।
- **भूकम्प :** भूकम्प के झटके कमजोर पहाड़ों को हिला देते हैं, जिससे मलबा नीचे गिर सकता है।
- **नदियों का कटावः** नदियाँ अपने किनारों की मिट्टी को काटती रहती हैं, जिससे पहाड़ कमजोर हो जाते हैं।

मानवीय कारणः

- **पेड़ काटनाः** पेड़ मिट्टी को अपनी जड़ों से जकड़ कर रखते हैं। जब हम पेड़ काटते हैं तो पहाड़ कमजोर हो जाते हैं।
- **सड़क और घर बनानाः** पहाड़ों को काटकर बनाए गए घर या सड़कें मिट्टी के संतुलन को बिगाड़ देती हैं।
- **गलत तरीके से खेतीः** ढलान वाली जगहों पर खेती करना भी भूस्खलन का कारण बन सकता है।
- **मलबा फेंकनाः** घर बनाते समय निकलने वाली मिट्टी और पत्थर को यूँ ही ढलान पर फेंक देना।
- **जंगलों में आगः** आग लगने से पेड़ पौधे खत्म हो जाते हैं, जिससे मिट्टी कमजोर हो जाती है।

खतरे के संकेत पहचानना सीखें

भूस्खलन अचानक नहीं होता, इसके कुछ संकेत होते हैं, जिन्हें हमें पहचानना चाहिएः

- **जमीन में दरारें :** घर की नींव, सड़क या जमीन में नई दरारें दिखाई देना।
- **असमान्य आवाजें :** पहाड़ या जमीन के अंदर से पत्थरों के लुढ़कने या टूटने की अजीब आवाज आना।
- **जानवरों का व्यवहार :** अगर जानवर अचानक असमान्य व्यवहार करें तो यह खतरे का संकेत हो सकता है।
- **नदी का रास्ता बदलना :** पानी का बहाव अचानक कम या ज्यादा होना या उसका रास्ता बदलना।

भूस्खलन से बचने के लिए क्या करें और क्या न करें?

भूस्खलन से पहलेः

- **सुरक्षित जगह पर घर बनाएँ :** नदी–नालों के किनारे, भूस्खलन वाले पुराने मलबे या ढलान के ठीक नीचे घर न बनाएँ।
- **पेड़ लगाएँ :** ज्यादा से ज्यादा पेड़– पौधे लगाएँ, खासकर स्थानीय घास और झाड़ियाँ।
- **पानी की निकासी सही रखें :** अपने घर के आस–पास पानी जमा न होने दें। नालियों की समय–समय पर सफाई करें।
- **परिवार को तैयार रखें :** परिवार के सभी सदस्यों को भूस्खलन के संकेतों और सुरक्षित जगह के बारे में बताएँ। एक आपातकालीन किट (टॉर्च, रस्सी, फर्स्ट एड बॉक्स) तैयार रखें।

भूस्खलन के दौरानः

- **तुरंत जगह छोड़ दें :** अगर आपको भूस्खलन का कोई भी संकेत मिले तो तुरन्त उस जगह को छोड़ दें और ऊँची और सुरक्षित जगह की तरफ भागें।
- **सावधान रहें:** मलबा या कीचड़ वाले रास्ते को पार करने की कोशिश न करें।
- **सुरक्षित जगह ढूँढें :** अगर भाग नहीं सकते तो किसी बड़ी चट्टान या मजबूत पेड़ के पीछे शरण लें।

भूस्खलन के बादः

- **तुरंत वापस न जाएँ :** भूस्खलन वाली जगह पर जल्दबाजी में वापस न जाएँ, क्योंकि दोबारा भूस्खलन हो सकता है।
- **मदद करें:** अगर कोई भूस्खलन फँस गया हो तो उसकी मदद करें और उसे फर्स्ट एड दें।
- **सही जानकारी दें:** प्रशासन और आपदा प्रबंधन को सही और पूरी जानकारी दें।

याद रखें :

सावधानी ही जीवन है, समझदारी ही सुरक्षा है।